2 नन्हे जासूस
(प्रेरक कहानी)

प्रतिध्वनि

हे ईश्वर, मुझे अधिक लेने के नहीं, अधिक देने के योग्य बनाओ।

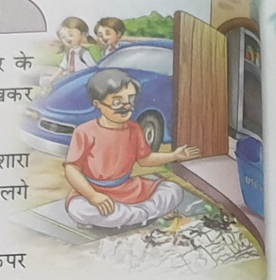

रोहन और हेमा ने स्कूल से आकर जैसे ही घर में प्रवेश किया कि बाहर के आँगन में एक चटाई पर दादा जी बैठे दिखे। उन्हें किसी काम में तल्लीन देखकर दोनों ठिठककर वहीं रुक गए।

हेमा ने कुछ कहना चाहा तो रोहन ने होठों पर अंगुली रखकर चुप रहने का इशारा किया। दोनों आँगन में रखी कार के पीछे छुपकर यह जानने का प्रयास करने लगे कि चटाई पर बैठे दादा जी आखिर क्या कर रहे हैं!

उन्होंने ध्यान से देखा कि दादा जी ने डस्टबिन का कचरा एक अखबार के ऊपर पलट रखा है और उस कचरे में से कुछ सामान बीन-बीनकर वे एक स्टील की प्लेट में रखते जा रहे हैं। डस्टबिन वहीं बगल में लुढ़का पड़ा है। हेमा ने धीरे से पूछा- "दादा जी यह क्या कर रहे हैं?"

"दादा जी शायद कचरे में से ऑलपिन बीन रहे हैं।" रोहन धीरे से बोला।

प्लेट में ऑलपिन गिरने से हल्की-सी खन-खन की आवाज आ रही थी। फिर बच्चों ने देखा कि दादा जी पुरानी कॉपियों के फटे पन्ने भी उठाकर, उनकी तह ठीक करके एक के ऊपर एक रखते जा रहे हैं।

हेमा ने दादा जी को टोकना चाहा किंतु रोहन ने फिर उसे रोक दिया। "आज हम छुपकर देखेंगे कि आखिर दादा जी इन ऑलपिनों और पुराने पन्नों का क्या करने वाले हैं।"

रोहन ने देखा कि दादा जी डस्टबिन के उस कचरे में से स्टेपलर पिन के बचे हुए टुकड़े भी प्लेट में रख रहे हैं।

दोनों बच्चे धीरे से कमरे के भीतर आ गए, जैसे उन्होंने कुछ भी नहीं देखा हो। उन्होंने ठान लिया था कि आज दादा जी की जासूसी करके ही रहेंगे।

भोजन के बाद दादा जी अपने कमरे में चले गए और पुरानी कॉपियों के फटे-पुराने पन्नों को कैंची से काटकर सुडौल आकार देकर चौकोर बनाने में जुट गए।

बच्चों ने बाहर की खिड़की में अपना अड्डा बना लिया था, जहाँ से दादा जी साफ दिखाई दे रहे थे। रोहन और हेमा इधर-उधर की बातें करते रहे। कभी स्कूल की, कभी अपने-अपने साथियों की, ताकि दादा जी को आभास न हो सके कि उन पर नजर रखी जा रही है।

एक घंटे के भीतर उन्होंने कागजों की छोटी-छोटी आठ दस कॉपियाँ बना ली थीं।

दोनों बच्चे उत्सुक थे कि देखें दादा जी उन कॉपियों का क्या करते हैं? फटे-पुराने कागज तो नगरपालिका की कचरा गाड़ी में डालने के लिए होते हैं, फिर दादा जी ये क्या कर रहे हैं? आज बच्चों की नजर सिर्फ़ दादा जी पर थी। वे दूसरे सभी काम कर तो रहे थे पर ध्यान रह-रहकर दादा जी की तरफ जा रहा था।

शाम को दादा जी घूमने के लिए निकले। बच्चों ने देख लिया था कि दादा जी ने वह छोटी-छोटी कॉपियाँ एक छोटे-से थैले में रख ली हैं और कुछ चॉक एवं पेंसिल के टुकड़े भी। चलते-चलते दादा जी झोंपड़-पट्टियों की तरफ मुड़ गए और एक झोंपड़ी के सामने रुक गए।

पहले से ही वहाँ उपस्थित चार-पाँच बच्चों ने उन्हें घेर लिया। "दादा जी आ गए! दादा जी आ गए!", कहते हुए उन्होंने अपने हाथ ऊपर कर दिए जैसे उनको पता हो कि दादा जी आज कुछ सामान बाँटेंगे।

दादा जी ने अपने थैले से कॉपियाँ निकालीं और उन बच्चों को बाँटने लगे और चॉक और पेंसिलों के टुकड़े भी बच्चों को वितरित करने लगे।

"दादा जी हमें भी! दादा जी हमें भी!", बच्चे हाथ बढ़ाकर चॉक और पेंसिलें ले रहे थे। दादा जी हँसते हुए सामान बाँटकर प्रसन्न हो रहे थे। अचानक रोहन और हेमा जो उनका चुपके-चुपके पीछा कर रहे थे, उनके सामने प्रकट हो गए। हेमा जोर से चिल्लाई, "दादा जी!", रोहन भी जोर से चिल्लाया, "दादा जी, आप यहाँ क्या कर रहे हैं?"

दोनों को अचानक सामने पाकर दादा जी हतप्रभ रह गए। फिर ठहाका मारकर हँसने लगे। "अच्छा, तो तुम लोग मेरा पीछा कर रहे थे।", उन्होंने हँसते-हँसते रोहन का कान पकड़ लिया। "दादा जी, हम लोग जानना चाहते थे कि आप कचरे में से क्या एकत्रित करते हैं और आज आपकी पोल खुल गई। दादा जी आप फटे-पुराने कागज क्यों इकट्ठे करते हैं? यह कचरा तो बाहर फेंकना चाहिए।", हेमा ने कहा।

"नहीं बेटी, दुनिया में प्रत्येक चीज़ की कीमत होती है। जो सामान हम बेकार समझकर फेंक देते हैं वह दुनिया के सैकड़ों-हजारों बच्चों के काम आ सकता है। ऐसे कितने बच्चे हैं जो थोड़ा-सा भी सामान बाजार से नहीं खरीद सकते। कहते हैं कि बूँद-बूँद से सागर भर जाता है। ऐसे ही फेंके जाने वाले फालतू सामान से न जाने कितने बच्चों का भविष्य बन सकता है। जैसे एक-एक ईंट जोड़कर मकान बनता है और तिनके-तिनके के जुड़ने से रस्सी बन जाती है, जो बड़े-बड़े वजनी सामान को उठा लेती है, वैसे ही यह छोटी-छोटी बेकार समझकर फेंकी गई चीज़ें देश-दुनिया की बड़ी आबादी के काम आ सकती हैं। रोहन, तुमने जो कॉपियाँ गुस्से में फाड़ दी थीं, उनको काम लायक बनाकर मैंने इन बच्चों में बाँट दिया। देखो, कितने खुश हैं यह बच्चे! स्टेपलर पिन के टुकड़े, चॉक तथा पेंसिलें जिन्हें तुम लोग प्रतिदिन फेंकते हो, देखो आज किसी के काम आ रहे हैं।"

रोहन बोला "हमें माफ कर दीजिए दादा जी! हम लोग छोटे हैं, यह सब नहीं जानते। हम आगे से ऐसी गलती

नहीं करेंगे।"

"और मेरी जासूसी?", जोर से हँसते हुए दादा जी ने पूछा।

"नहीं करेंगे! नहीं करेंगे! हम जासूसी भी नहीं करेंगे!"

दोनों बच्चों ने एक-दूसरे के हाथ में हाथ फँसाकर और हाथ ऊपर करते हुए नारा लगाया और दादा जी से लिपट गए।

जीवन मूल्य : हमें चीजों की बरबादी नहीं करनी चाहिए क्योंकि हम उन्हें जरूरतमंद व्यक्तियों को दे सकते हैं।

शब्दार्थ

तल्लीन	–	संलग्न/काम में खोया हुआ	फालतू	–	बेकार
प्रयास	–	प्रयत्न	लायक	–	योग्य
हतप्रभ	–	जिसकी प्रभा नष्ट हो गई हो	एकत्रित	–	इकट्ठा

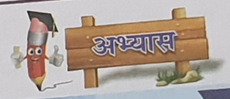

पाठ्यविषयी मूल्यांकन (Curricular Assessment)

लिखित [Writing Skills (comprehension, spelling, vocabulary, grammar)]

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) रोहन और हेमा ने घर में प्रवेश करते ही क्या देखा?

(ख) दादा जी क्या कर रहे थे?

(ग) बच्चों ने दादा जी की जासूसी करने की क्यों ठानी?

(घ) दादा जी का पीछा करके बच्चों ने क्या देखा?

(ङ) इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

2. सही कथन पर (✓) का तथा गलत कथन पर (×) का चिह्न लगाइए–

(क) दादा जी को काम में तल्लीन देख दोनों बच्चे खेलने निकल गए।

(ख) दादा जी कचरे में से ऑलपिन बीन रहे थे।

(ग) दादा जी झोंपड़-पट्टी के बच्चों को टॉफियाँ बाँटने लगे।

3. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए– [Multiple Choice Questions (MCQs)]

(क) दादा जी आँगन में कहाँ बैठे थे?
(i) कुर्सी पर ○ (ii) चटाई पर ○ (iii) चारपाई पर ○

(ख) दादा जी डस्टबिन से क्या बीन रहे थे?
(i) पॉलीथीन ○ (ii) डिब्बे ○ (iii) कागज और ऑलपिन ○

(ग) दादा जी ने पुराने कागजों का क्या किया?
(i) कॉपियाँ बनाईं ○ (ii) लिफाफे बनाए ○ (iii) रद्दी वाले को दे दिए ○

(घ) शाम को बच्चों ने दादा जी को कहाँ जाते हुए देखा?
(i) पार्क में ○ (ii) डॉक्टर के पास ○ (iii) झोंपड़-पट्टी में ○

भाषा–बोध (Grammar-based Assessment)

1. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए–

उत्सुक	–	.....	चलना	–	.....
चतुर	–	.....	बूढ़ा	–	.....
उपस्थित	–	.....	गरीब	–	.....
बच्चा	–	.....	हँसना	–	.....

2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए–

पाठक	–	.....	बूढ़ा	–	.....
बालक	–	.....	भाई	–	.....
दादा	–	.....	वीर	–	.....
वर	–	.....	बुद्धिमान	–	.....

3. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखिए–

दरवाजा	–	.....	भावना	–	.....
आँख	–	.....	वस्तु	–	.....
सौगात	–	.....	छात्र	–	.....
कॉपी	–	.....	खिड़की	–	.....

4. निम्नलिखित वाक्यों से कारक-चिह्न छाँटकर लिखिए–

1. बच्चे स्कूल से आकर टीवी देखने बैठ गए। .....
2. वह कार के पीछे छुप गया। .....
3. दादा जी डस्टबिन से पिन बीन रहे थे। .....

Date 10/6/2020 CLASS: VI HINDI 2ND LANG

आनंदी हिन्दी पाठशाला

Ch: नन्हे जासूस

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

(क) रोहन और हेमा ने घर में प्रवेश करते ही क्या देखा ?

Ans) रोहन और हेमा ने घर में प्रवेश करते ही बाहर के आँगन में एक चटाई पर दादा जी को बैठे देखा।

(ख) दादा जी क्या कर रहे थे ?

Ans) दादा जी डस्टबीन का कचरा एक अखबार के ऊपर पलट रहा था और उस कचरे में से कुछ सामान बीन-बीनकर वे एक स्टील की प्लेट में रखते जा रहे थे।

(ग) बच्चों ने दादा जी की जासूसी करने की क्यों ठानी ?

Ans) बच्चों ने दादा जी की जासूसी करने की ठानी क्योंकि वह छुपकर देखना चाहते थे कि दादा जी ऑलपिनों और पुराने पन्नों का क्या करने वाले हैं।

(घ) दादा जी का पीछा करके बच्चों ने क्या देखा ?

Ans) दादा जी का पीछा करके बच्चों ने देखा कि जो सामान को बेकार समझकर फेंक दिया जाता है वह दुनिया के सैंकड़ों-हजारों बच्चों के काम आ सकता है। रोहन ने जो कॉपियाँ गुस्से में फाड़ दी थी, उनको काम लायक बनाकर दादा जी जरूरतमंद बच्चों में बाँट दिया।

(ङ) इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

Ans) इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें चीजों की बरबादी नहीं करनी चाहिए क्योंकि हम उन्हें जरूरतमंद व्यक्तियों को दे सकते हैं।

2) सही कथन पर (✓) का तथा गलत कथन पर (×) का चिह्न लगाइए -

(क) दादा जी को काम में तल्लीन देख दोनों बच्चे रसोई निकल गए - ×

(ख) दादा जी कचरे में से ऑलपिन बीन रहे थे - ✓

(ग) दादा जी झोपड़-पट्टी के बच्चों को टाफियाँ बाँटने लगे - ×

(घ) दोनों बच्चों द्वारा अपनी जासूसी के बारे में जानकर दादा जी बहुत नाराज हुए - ×

(ङ) हमारा फेंका हुआ फालतू सामान किसी के काम आ सकता है - ✓

3) सही उत्तर पर चिह्न लगाइए -

(क) दादा जी आँगन में कहाँ बैठे थे ?

(i) कुर्सी पर ☐ (ii) चटाई पर ☑ (iii) चारपाई पर ☐

(ख) दादा जी डस्टबीन से क्या बीन रहे थे ?

(i) पॉलीथीन ☐ (ii) डिब्बे ☐ (iii) कागज और ऑलपिन ☑

(ग) दादा जी ने पुराने कागजों का क्या किया ?

i) कॉपियाँ बनाई ☑ ii) लिफाफे बनाए ☐

iii) रद्दी वाले को दे दिए ☐

(घ) शाम को बच्चों ने दादा जी को कहाँ जाते हुए देखा ?

i) पार्क में ☐ ii) डॉक्टर के पास ☐

iii) झोपड़-पट्टी में ☑

Home- WORK :-

1) निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए —

i) उत्सुक -
ii) चलना -
iii) बूढ़ा -
iv) चतुर -
v) बच्चा -
vi) गरीब -

2) निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए -

i) पाठक - vi) बुद्धिमान -
ii) बालक -
iii) दादा -
iv) वर -
v) भाई -

3) निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखिए -

i) दरवाजा -
ii) आँख -
iii) कॉपी -
iv) भावना -
v) वस्तु -
vi) छात्र -